फौलादी सिंह और अन्तरिक्ष की अप्सरा

सम्पादक:-
भुलशन राय
लेखक:-
अश्वनी (आबू)
चित्रांकन:-
जुगल किशोर

हमेशा की तरह डा० जॉन के टापू पर शान्ति छाई हुई थी- लेकिन टापू के किनारे पर बने टेनिसकोर्ट में फौलाद, भारत और अन्तरिक्षक के बीच जबरदस्त मुकाबला चल रहा था। एक ओर फौलाद अकेला था- दूसरी ओर भारत और अन्तरिक्षक थे। लम्बू रैफरी बना हुआ था- और साथ ही साथ कमेंट्री दे रहा था।

फौलाद के इस शॉट को सम्भाल रहे हैं कम्प्यूटर भारत और इसके साथ ही...

...एक्ला राऊण्ड समाप्त होने जा रहा है!

मगर तभी फौलाद के अस्तित्व में डा० जॉन की आवाज उभरी...

फौलाद... ब्रिटिश एयरलाइन्स का एक विमान हवामें कलाबाजियां खाता हुआ नीचे आ रहा है!

ओह!

इधर जबकि भारत शॉट लगा चुका था और गेंद फौलाद के पाले में आ रही थी- अचानक डा० जान द्वारा इस दुर्घटना की सूचना मिलते ही फौलाद ने हवा में जम्प लगा दी।

!?

आ...रे...रे क्या हुआ भाई?

आँय... कहां चले मैदान छोड़ कर?

मैं चला दोस्तो!

और सिर्फ दो सेकिन्ड में फौलाद ने दो सौ मील की दूरी तय करली-

ओह! बस इस ऊँची इमारत से टकराने ही...

...गलत था यह...

फौलाद के दोनों हाथ खिसकते हुए विमान की पैंदी पर चुपक गये।

और अब फौलाद उस विमान को... जिसमें दो सौ अस्सी यात्री थे... लेकर निकटवर्ती एयरपोर्ट की ओर उड़ा चला जा रहा था।

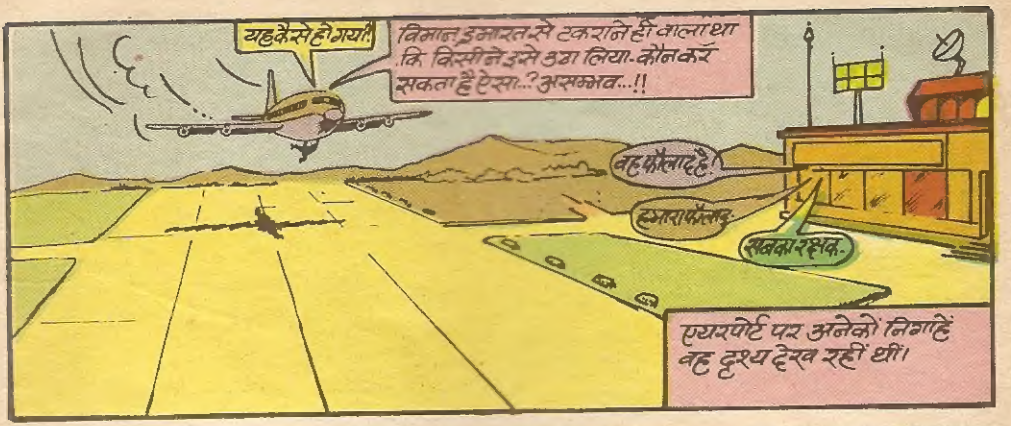
यह कैसे हो गया!
विमान इमारत से टकराने ही वाला था कि किसी ने इसे उठा लिया- कौन कर सकता है ऐसा...? असम्भव...!!
वह फौलाद है!
हमारा फौलाद
सबका रक्षक-
एयरपोर्ट पर अनेकों निगाहें वह दृश्य देख रहीं थीं।

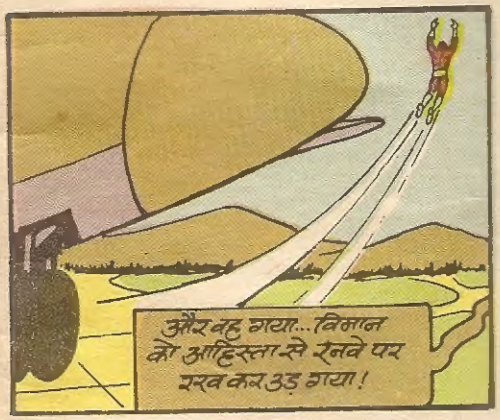
और वह गया... विमान को आहिस्ता से रनवे पर रख कर उड़ गया!

सिर्फ दो मिनट बाद...
वह आ रहा है!
उन्हें नहीं मालूम था कि फौलाद रबेल को बीच में रोक कर दो सौ अस्सी इन्सानों का जीवन बचाने के लिये चला गया था!

डियर फौलाद... तुमने एक प्वाइंट खो दिया अब स्कोर 6-5 है- और तुम यह राऊंड हार गये-
चौथा राऊंड जीतकर मैं इन कम्प्यूटरों से फिर आगे हो जाऊंगा...

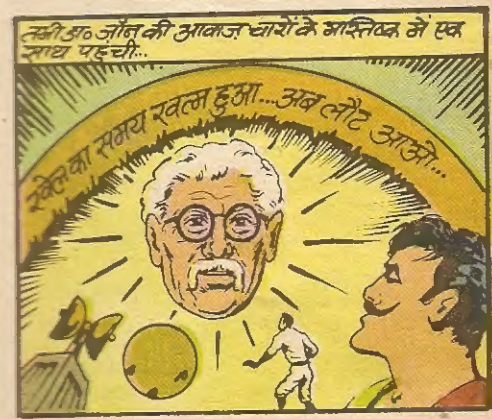
उसी डा० जॉन की आवाज चारों के मस्तिष्क में एक साथ पहुंची...
खेल का समय खत्म हुआ... अब लौट आओ...

डा० जॉन का आदेश मिलते ही चारों ने अपने आपको डा० जॉन के पास, कन्ट्रोल रूम में ट्रांसमिट कर लिया।

महारानी रावूनिया को हम सबका प्रणाम!

प्रणाम स्वीकार हुआ मित्रो!

महारानी रावूनिया!

कन्ट्रोल रूम की विशाल स्क्रीन पर इस समय पृथ्वी से लगभग दो करोड़ प्रकाश वर्ष दूर टेकना ग्रह की महारानी रावूनिया की तस्वीर थी।

फौलाद... महारानी रावूनिया हमारे लिये एक सूचना लायी हैं!

सूचना शुभ है या अशुभ...?

मेरे ख्याल से तो वह सूचना आश्चर्य जनक है। कृपया ध्यान से सुनिये...

... एक सौरमण्डल है... जिसका नाम "विलोम" है! उस सौरमण्डल में तीन सूरज हैं और दो सौ चालीस ग्रह हैं- और इन सब ग्रहों पर जीवन है! इस सौरमण्डल "विलोम" की एक समाज्ञी है- जिसका नाम यादस्त महान है उसका कहना है कि वह ब्रह्माण्ड की सबसे खूबसूरत औरत है!

दो सौ चालीस ग्रहों की उस स्वामिनी ने अब अपना विवाह करने का निश्चय किया है... और उसने अपने दूत ब्रह्माण्ड के समस्त ग्रहों पर भेजकर, प्रत्येक ग्रह के सबसे योग्य व्यक्ति को आमन्त्रित किया है। जब ब्रह्माण्ड के प्रत्येक ग्रह का सर्वश्रेष्ठ आदमी उसके पास पहुंच जायेगा- तब वह उनमें से उस व्यक्ति का चुनाव करेगी जो सबसे अधिक योग्य होगा।

हमारे टेक्ना ग्रह पर उसका एक दूत आया था। और उसने हमारे ग्रह के युवा सेनापति को हमारे ग्रह का सबसे योग्य व्यक्ति माना। यह सही भी है... मैं भी सेनापति शम्भक को अपने ग्रह का सबसे योग्य व्यक्ति मानती हूं। 'विलोम' के उस दूत ने जब मुझसे सेनापति शम्भक को मांगा तो मैंने सेनापति शम्भक के अंगरक्षकों के रूप में दो और व्यक्तियों का चुनाव किया- और विलोम के दूत के साथ उन तीनों को भेज दिया। देर-सवेर तुम्हारे ग्रह 'पृथ्वी' पर 'विलोम' का दूत आयेगा- और मेरा अनुमान है कि तुम्हें (फौलाद को) पृथ्वी का सबसे योग्य व्यक्ति घोषित करेगा!

अगर ऐसा हुआ तो फौलाद का अंगरक्षक बन कर मैं विलोम के दूत के साथ जाऊंगा!

महारानी राबूजिया की जानकारी के अनुसार- विलोम, टेक्ना ग्रह से लगभग पांच अरब प्रकाशवर्ष दूर है- तो पृथ्वी से विलोम की दूरी... पांच अरब दो करोड़ प्रकाशवर्ष के लगभग होगी। पृथ्वी से इतनी दूर... विलोम पर न जाने हमें किन हालातों से गुज़रना पड़े... इसलिये हमें अभी से कुछ आवश्यक तैयारियां कर लेनी चाहियें!

और अब मैं विदा लेती हूं- टेकना ग्रह के वैज्ञानिक आपसे सम्पर्क बनाये रखेंगे...ताकि आवश्यकता पड़ने पर हम एक दूसरे से तुरन्त सहयोग प्राप्त कर सकें।

विदा! महारानी राबूनिया!

राबूनिया के विदा होते ही यह सब अपनी तैयारियों में जुट गये।

सबसे पहले डा० जॉन ने भारत तथा अन्तरिक्षक को कुछ अन्य शक्तियां प्रदान कीं।

उसके बाद अपनी तथा फौलाद और लक्कू की पोशाकों में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन किये- और उन पोशाकों को कुछ नई शक्तियों से लैस भी किया।

दो दिन बाद...

फौलाद यह जासूसी यन्त्र हैं- और हम सबके लिये एक-एक अलग-अलग यन्त्र है- चाहे हम ब्रह्माण्ड में कहीं भी पहुंच जायें चाहे अप होश में हो या बेहोश हों- भले ही हमें कोई ट्रांसमिट करके लेजाये- या कल्पना की शक्ति से लेजाये- यह यन्त्र हमेशा हमारे पीछे रहेंगे- आवश्य पड़ने पर यह हमारे बिल्कुल पास भी आ सकेंगे!

लेकिन तभी उसकमरे की दीवार अचानक रंगीन हो उठी-

स्वामी... आपको कन्ट्रोल-रूम में ट्रांसमिट किया जा रहा है!

मुझे ही नहीं... पोलाद, लम्बू, आरत और अन्तरिक्षपंख को भी ट्रांसमिट करो!...

यह वास्तव में छुपी हुई टी.वी. स्क्रीन थी- जिसे इस समय टोपू के संचालक 'मास्टर रोबोट' ने आवश्यकता पड़ने पर चालू किया था।

...क्योंकि हम सब ही यह जानना चाहेंगे कि कंट्रोल रूम में ऐसी क्या अनोखी बात हो गयी है जो तुम हमें तुरन्त दिखाना चाहते हो?

और अगले ही क्षण वह सब कंट्रोल रूम में प्रकट हो रहे थे-

यह कौन है?

कंट्रोल रूमकी टी.वी. स्क्रीन पर इस समय एक अजनबी इन्सान का मुस्कराता चेहरा था।

सज्जनों... कृपया विलोम के दूत का अभिवादन स्वीकार करें!

ओह! विलोम का दूत!

वह स्पष्ट और बिल्कुल साफ-सुथरी हिन्दी बोल रहा था।

विलोम... दो सौ चालीस ग्रहों का सौरमण्डल है- जो ब्रह्माण्ड का सबसे विशाल और शक्तिशाली साम्राज्य है... मैं उसका दूत हूं!

दो सौ चालीस ग्रहों की साम्राज्ञी महारानी आरसा महान ने ब्रह्माण्ड के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति से विवाह करने का निश्चय किया है। विलोम के महान वैज्ञानिकों की जानकारी के अनुसार सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के लगभग एक अरब ग्रहों पर जीवन है! जिनमें से पचास करोड़ ग्रहों के सबसे योग्य व्यक्ति विलोम के सौवें ग्रह पर पहुंच चुके हैं। मैं तुम्हारी पृथ्वी के सबसे योग्य व्यक्ति को आमन्त्रित करने आया हूं! मैंने अपने विस्तृत...

...अध्ययन के बाद पृथ्वी का सबसे योग्य व्यक्ति फौलादीसिंह को घोषित किया है!

अगर मैं कहूं कि मैं नहीं जाना चाहता तुम्हारे साथ तो?

तो भी मैं तुम्हें विलोम के सौवें ग्रह पर ट्रांसमिट कर दूंगा- इसलिये अच्छा यही कि तुम स्वेच्छा से मेरे साथ चलो!

मैं अपने साथ अपने मित्र लम्बू, डा० जॉन तथा अपने कम्प्यूटरों भारत और अन्तरिक्षक को भी ले जाना चाहूंगा।

मुझे कोई आपत्ति नहीं... विलोम का सौवां ग्रह तुम्हारी पृथ्वी से सौ गुना अधिक बड़ा है- और हमने वहां दस अरब अतिथियों के ठहरने की व्यवस्था की है- जबकि प्रतियोगी सिर्फ एक अरब होंगे!

तो ठीक है, हमारे साथ हमारे पांच अन्य यन्त्र भी जायेंगे- लेकिन उन्हें ले जाना नहीं पड़ेगा... वह हमारे साथ स्वयं ही चले जायेंगे!

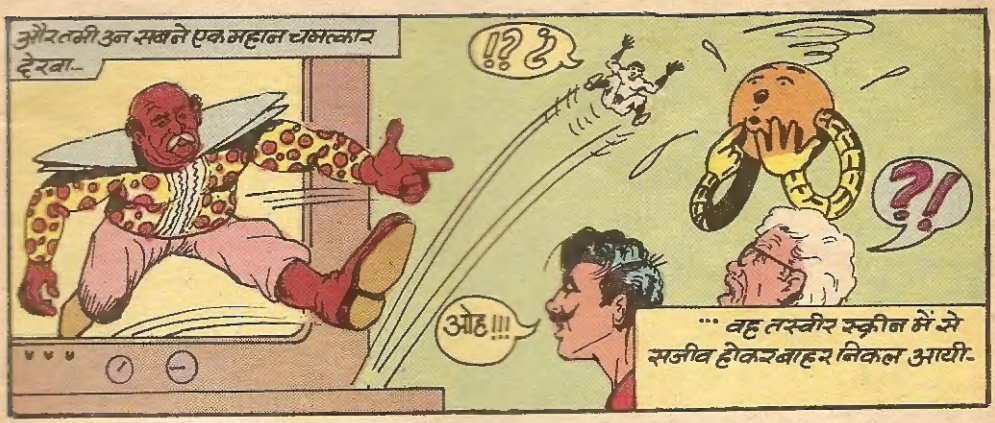

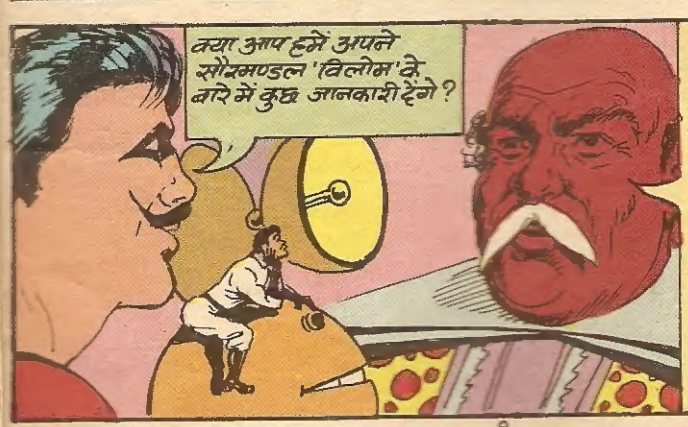

हम यहां से कल्पना की गति से विलोम के सौवें ग्रह पर पहुंचेंगे... वहां आतिथियों के हर सवाल का जवाब देने के लिये और उनकी हर इच्छा पूरी करने के लिये सेवक मौजूद होंगे... इसलिये यहां मैं कुछ नहीं बताऊंगा। कृपया मेरे इस इन्कार का बुरा न मानें!

ठीक पांच मिनट बाद डा० जॉन वहां पुनः ट्रांसमिट हुए...

ठीक है, अब आप लोग मन में एक से पांच तक की गिनती गिनें !

यह कहने के साथ ही सौरमण्डल विलोम से आये उस दूत ने अपना हाथ इनकी ओर उठाया-

और अगले ही क्षण वह सब ट्रांसमिट होने लगे...

और जैसे ही पांच सेकिण्ड पूरे हु वह सौरमण्डल विलोम में प्रकट होने लगे !

1 2 3 4 5

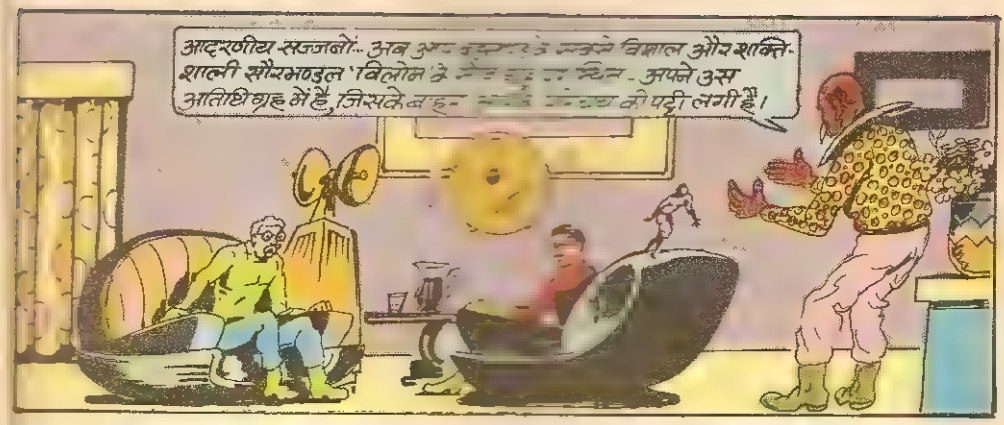
आदरणीय सज्जनो... अब अपने ब्रह्मांड के सबसे विशाल और शक्तिशाली सौरमण्डल 'विलोम' के [illegible] - अपने उस आतिथेय ग्रह में हैं, जिसके [illegible] की पट्टी लगी है।

सच्चाई जानने के लिये लम्बू तुरंत कक्ष से बाहर निकला...

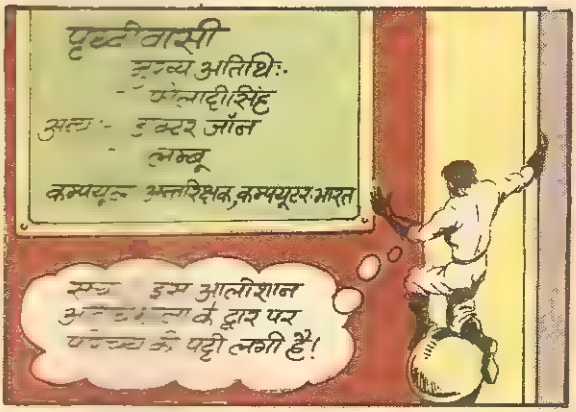
पृथ्वीवासी
मुख्य अतिथि:
फौलादी सिंह
अन्य -
डक्टर जॉन
लम्बू
कम्पयूटर अन्तरिक्षपत, कम्पयूटर भारत
सच इस आलीशान अन्तरिक्षयान के द्वार पर [illegible] की पट्टी लगी है!

दूरे ग्रह पर एक ही [illegible] और आकार के मकान बने हैं... ब्रह्माण्ड के प्रत्येक ग्रह के प्रतिनिधि के एक अलग मकान दिया गया है।
लेकिन ब्रह्माण्ड के सभी ग्रहों का वायुमण्डल एक जैसा नहीं है - इसलिये दूसरे ग्रहोंसे आये लोग यहां जीवित कैसे रहेंगे ?

जॉन अंकल, फौलाद, अन्तरिक्षक, और भारत को साथ लेकर क्यों न इस पूरे ग्रह की सैर की जाये ?

आकाश में उड़ते लम्बू ने सोचा और वह नीचे की ओर मुड़ा...

...लेकिन तभी उसने उन चारों को ऊपर आते देख

अरे! वह तो स्वयं ही ऊपर आ रहे हैं!

मैं आपके पास यह सोचकर वापस आ रहा था कि क्यों न हम सब इस ग्रह की सैर कर आवें ?

वह दूत, जो हमें यहां लाया है उसके गायब होते ही फौलाद ने भी यही इच्छा प्रकट की थी!

और अंकल ने मेरी इच्छा को अपना समर्थन दे दिया!

यानि कि डा० जॉन भी चाहते हैं कि इस ग्रह की सैर की जाये!

सैर करने के साथ हम अपने टकना ग्र की अतिथिशाल भी देखेंगे

सबसे अपनी एक उलझन के बारे में आपकी राय जानना चाहता हूँ... वह यह कि हम अपनी गलतियों के कारण इस ग्रह पर वायुमण्डल सम्बन्धी कोई परेशानी महसूस नहीं कर रहे हैं... लेकिन बाकी ग्रहों के लोगों को तो यहां अपने ग्रह का वायुमण्डल न मिलने के कारण बहुत असुविधा हो रही होगी ?
?
इतने कहने के ही लम्बू का वाक्य समाप्त हुआ... तभी उनके सामने एक इन्सान प्रकट हुआ।
मैं उनका मेक डेम हूँ!
डेम ?!
यह मेरा नाम है। आपके हर सवाल का जवाब देना और आपकी हर इच्छा की पूर्ति करना, मेरा कर्त्तव्य है!
माननीय लम्बू जी... आपके सवाल का जवाब यह है कि हमने अपने अतिथियों के लिए उनके आवास पर उनके ही ग्रह का कृत्रिम वायुमण्डल कर दिया है। आपके आवास पर यह व्यवस्था इंसानियों नहीं की गई है। आप अपनी वैज्ञानिक पोशाकों के कारण वायुमण्डल सम्बन्धी कोई परेशानी महसूस नहीं करेंगे।
ओह! तब तो वह सब, जो हमने तरह वैज्ञानिक पोशाकें नहीं पहने हुए हैं... वह एक प्रकार से अपने आवरण में कैदी बने हुए हैं ?

नहीं, यहां कोई कैदी नहीं है... जो अपने आवास से बाहर जाना चाहता है, हम उसके लिये ऐसा वाहन उपलब्ध करा देते हैं, जिसमें उसके गृह का ही वायुमण्डल होता है और अधिकांश अतिथि अपने गृह के वायुमण्डल युक्त वाहनों में घूम फिर रहे हैं।

... हमारे यह वाहन... कोई साधारण किस्म के वाहन नहीं हैं... यह राकेट की गति से उड़ भी सकते हैं और साधारण वायुयान की गति से आकाश में भ्रमण भी कर सकते हैं।

... तथा पानी के अन्दर और पानी की सतह पर भी यात्रा कर सकते हैं। पानी के अन्दर इनकी अधिकतम गति दस हजार मील प्रति मिनट है और कम से कम दो मील प्रति घण्टा है। पानी की सतह पर यही गति चालीस हजार मील प्रति मिनट और पांच मील प्रति घण्टा है।

अगर आपको भी यह वाहन चाहिये तो आज्ञा दीजिये मैं अभी मंगा देता हूं!

जब आवश्यकता होगी मंगा लेंगे... फिलहाल तो हम बिना वाहन के ही इस ग्रह की सैर करना चाहते हैं!

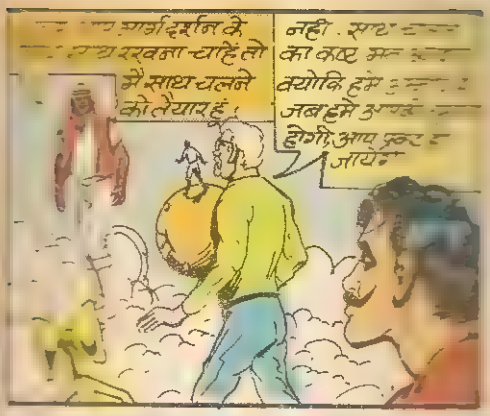
नहीं . सर! इस
का कष्ट मत
क्योंकि हमें
जब हमें आपकी
होगी, आप फ़ौरन
जायेंगे

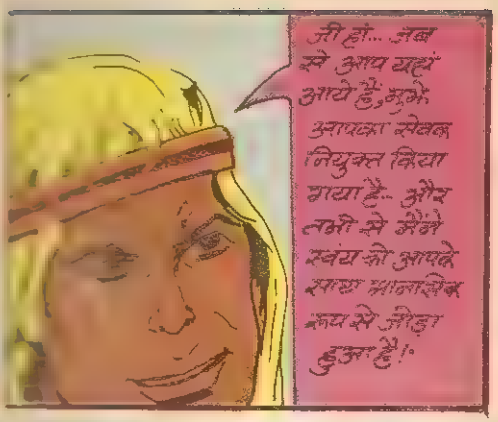
जी हाँ... जब
से आप यहाँ
आये हैं, मुझे
आपका सेवक
नियुक्त किया
गया है... और
तभी से मैंने
स्वयं को आपके
साथ मानसिक
रूप से जोड़ा
हुआ है!

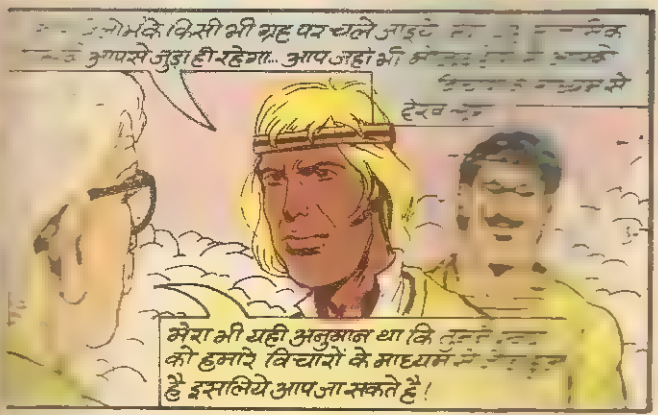
आपसे जुड़ा ही रहेगा... आप जहाँ भी
देव
मेरा भी यही अनुमान था कि तुम्हें
को हमारे विचारों के माध्यम से
है इसलिये आप जा सकते हैं!

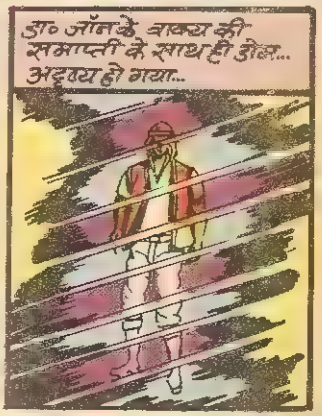
डा० जॉन के वाक्य की
समाप्ती के साथ ही डेल...
अदृश्य हो गया...

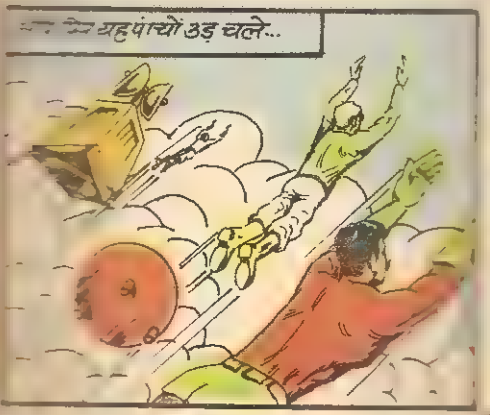
यहाँ से सभी उड़ चले...

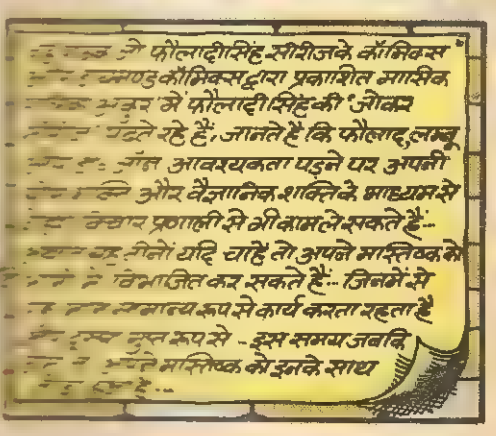
फौलादीसिंह सीरीजके कॉमिक्स
कॉमिक्सद्वारा प्रकाशित मासिक
अंक में फौलादीसिंह की 'जोरदार
पढ़ते रहे हैं, जानते हैं कि फौलाद, लम्बू
आवश्यकता पड़ने पर अपनी
और वैज्ञानिक शक्ति के माध्यम से
प्रणाली से भी काम ले सकते हैं--
चाहें तो अपने मस्तिष्क को
विभाजित कर सकते हैं-- जिनमें से
सामान्य रूप से कार्य करता रहता है
नूतन रूप से - इस समय जबकि
अपने मस्तिष्क को इनके साथ

... अर्थात यह सब जो कुछ बोल रहे हैं... और सोच रहे हैं... वह सब डोम के मस्तिष्क में पहुंच रहा है। तो इन तीनों ने अपने मस्तिष्क के दूसरे भाग को सक्रिय कर लिया है... अब इनके मस्तिष्क में एक साथ दो प्रकार के विचार हैं। अर्थात मस्तिष्क के एक भाग में तो यह आपस में सामान्य बात-चीत करते उड़ रहे हैं, जिसे डोम भी अपने किसी अज्ञात स्थान पर बैठा सुन रहा होगा दूसरा भाग जिसे हम... इन तीनों का काल्पनिक रूप भी कह सकते हैं। वह सिर्फ आपस में ही सम्बोधित हो चुका है। जिसका ज्ञान सिर्फ तीनों के अतिरिक्त भारत और अन्तरिक्षक को ही था। इनके अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति किसी भी प्रकार अथवा किसी भी माध्यम से इनके इस काल्पनिक रूप का आभास नहीं पा सकता था।

फौलाद... यह हमारे लिये हानिकारक है कि डोम हमारे मस्तिष्क के विचारों को पढ़ सकता है... इसलिये हमें अपने गुप्त मस्तिष्कों को हमेशा सक्रिय रखना है... ताकि हम स्वतन्त्र रूप से जो कुछ सोचें अथवा योजना बनायें वह अन्य किसीको मालूम न हो।
ठीक है अंकल! मेरा गुप्त मस्तिष्क आपके गुप्त मस्तिष्क से जुड़ा रहेगा।

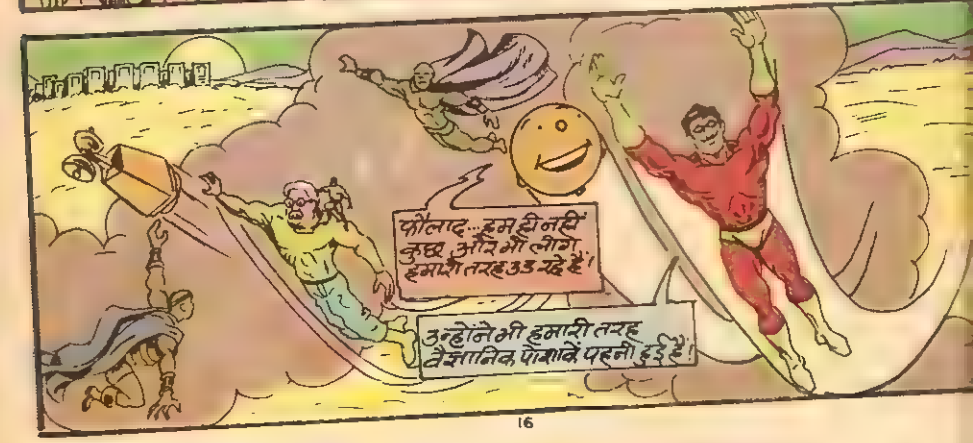

विलोम की साम्राज्ञी महारानी थारसा महान का हुक्म हुआ है कि यहाँ से सिर्फ दस ग्रहों के व्यक्तियों को उनके पास भेजा जाये!
मतलब यह हुआ माननीय थारसा महान से विवाह के लिये
सामने पेश किया जायेगा
अर्थात उन दसों विजेताओं में से
पास
उपस्थित एक अरब प्रतियोगीयों के
यह क्रापोटों हैं!... जिसके बारे में
अत्यन्त विनाशकारी शक्तियां
विजय प्राप्त करने के लिये

क्या विजय प्राप्त करनेके लिये अपने प्रतिद्वन्द्वी को जान से मार देने का नियम है ?

नहीं ऐसा कोई नियम नहीं है जो प्रतिद्वन्द्वी पराजय स्वीकार रहे हैं हम उन्हें उनके ग्रहोंपर भेजते जा रहे हैं

... और हमारे पूरे सौरमण्डल मे [illegible] व्यवस्था की जा चु[illegible] है कि प्रत्येक ग्रह [illegible] एक दूसरे की भाषा [illegible] सकता है- अर्थात [illegible] जब अपने ग्रह की [illegible] से बोलेगा तो उस[illegible] में स्वयं ही उसका अनुवाद तुम्हारी [illegible] की उस भाषा मे हो [illegible] जायेगा जिसे तुम [illegible] करो।

डोम की बात समाप्त होते ही,डोम का इशारा पाकर यह सब इमारतो के बीच बने एक विशाल मैदान मे [illegible] वहांडोम ने एक चेतावनी दी।

फौलाद इस युद्ध मे यदि तुम्हारे किसी भी शत्रु ने हस्तक्षेप किया तो सजा के तौर पर उसे ब्रह्माण्ड के किसी भी सूर्य पर ट्रान्समिट कर दिया जायेगा, वह क्षण भर मे वह विशाल कर ज्वाला बन जायेगा।

मेरा कोई भी शत्रु इस युद्ध मे हस्तक्षेप नहीं करेगा।

और फिर अब फौलाद तथा 'टम्ब' ग्रह का योद्धा क्रायोटा आमने-सामने थे।

फौलाद,मैं अपने प्रतिद्वन्द्वी को तड़प-तड़प कर मरता देख कर बहुत खुश होता हूं!

लेकिन मुझे हर किसी को पराजित करने के बाद दुख होता है...क्योंकि युद्ध से मुझे नफरत है!

तुम मूर्ख हो [illegible] सिर्फ युद्ध ही [illegible] जीवित रहने [illegible] साधन है [illegible] नही पसन्द [illegible] उसे ब्रह्माण्ड [illegible] भी जीने का [illegible] नही मिलना [illegible] इसलिये तुम [illegible] के हाथों [illegible] जा रहे हो

अपने वक्तव्य के समाप्ति के साथ ही क्रायोटे दांया हाथ उठाया

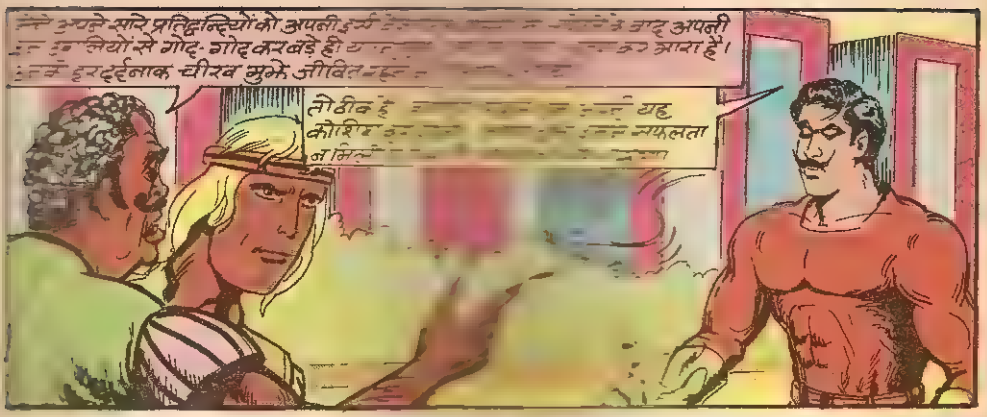
तो ठीक है
यह

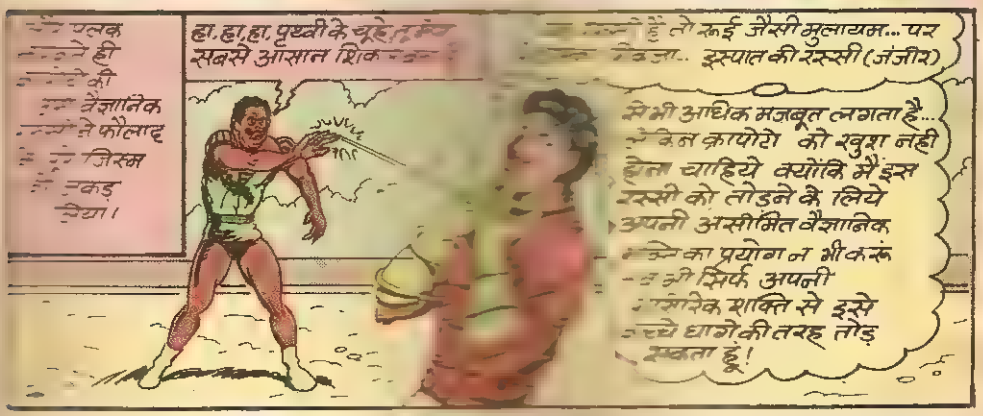
हा, हा, हा, पृथ्वी के चूहे!
सबसे आसान शिकार
से भी अधिक मजबूत लगता है...
पर इन क्रायोरो को खुश नहीं
होना चाहिये क्योंकि मैं इस
रस्सी को तोड़ने के लिये
अपनी असीमित वैज्ञानिक
शक्ति का प्रयोग न भी करूं
तो भी सिर्फ अपनी
साधारण शक्ति से इसे
कच्चे धागे की तरह तोड़
सकता हूं!

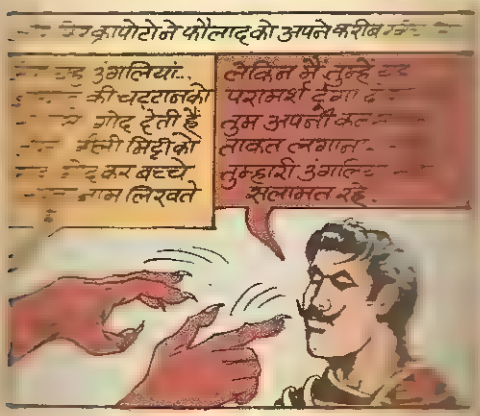
लेकिन मैं तुम्हें
परामर्श दूंगा कि
तुम अपनी
ताकत लगाना
तुम्हारी उंगलियां
सलामत रहें.

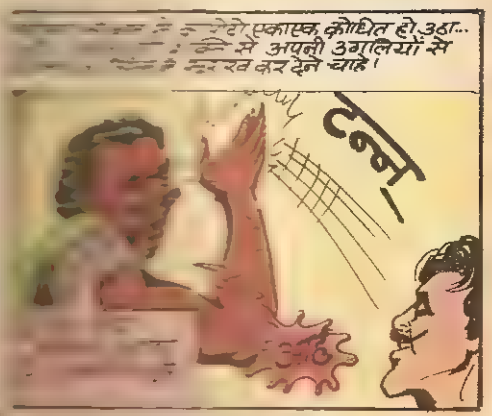
टन्न

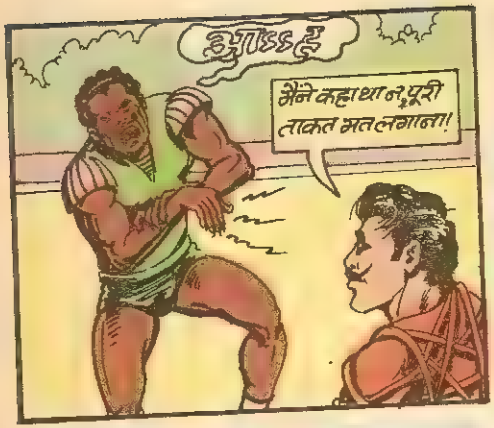
ह्याऽऽऽऽह
मैंने कहा था न, पूरी ताकत मत लगाना!

अ...ह... म... मेरा हाथ...
अब तुम्हारी यह उंगलियां भविष्य में किसी को भी यातना नहीं दे सकेंगी!

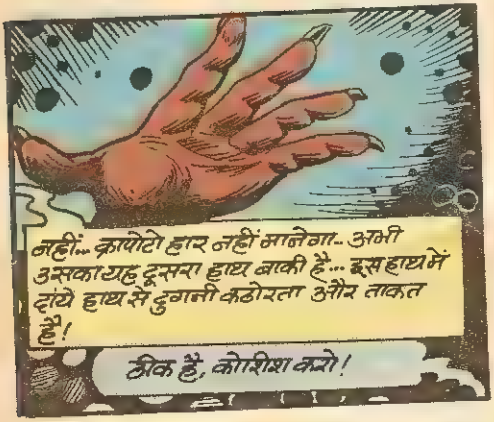
नहीं... क्रापोटो हार नहीं मानेगा... अभी उसका यह दूसरा हाथ बाकी है... इस हाथ में दांये हाथ से दुगनी कठोरता और ताकत है!
ठीक है, कोशिश करो!

परिणाम वही हुआ...
ह्याऽऽऽऽऽ
च... च... च... क्रापोटो तुम्हारा दूसरा हाथ भी बेकार हो गया.
ढन्न

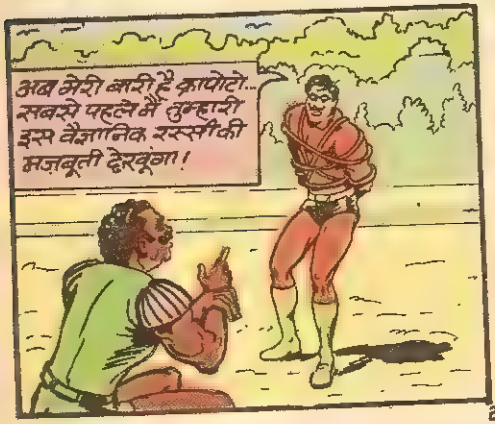
अब मेरी बारी है क्रापोटो... सबसे पहले मैं तुम्हारी इस वैज्ञानिक रस्सी की मज़बूती देखूंगा!

ओह! नहीं...! टम्ब ग्रह की वैज्ञानिक रस्सी मोम की तरह पिघलने लगी?

...लिस ... में यह रस्सी ... धातु के बने राकेट ... पर भेजे जाते हैं, ... ६ महीने सर्य ... मंत्र कर शोधकार्य ... करते हैं... तुमने इसे ... कैसे गला दिया?

अपनी वैज्ञानिक शक्ति से?

और अब मैं, यानी पृथ्वी का यह मामूली सा चूहा, तुम पर अपना सिर्फ एक प्रहार करेगा... अगर तुम उसे पचा गये तो मैं हार मान लूंगा।

...ते ही क्षण...

SSSSS

...शीशे की ...मानान्तिके साथ ही क्रापोटे भूमि पर गिर पड़ा

...के उप- ... हुआ नहीं

आश्चर्य है!

...ठ हजार योद्धाओं को पराजित ... और यह तुम्हारा सिर्फ एक घूंसा

...ने अभी अपनी कुल वैज्ञानिक ... विनाशक शक्ति का एक करोड़वां ... प्रदर्शन किया था!

उसने अपनी एक्स-रे नजर क्रापोटे के जिस्म पर डाली।

ओह! फौलाद के प्रहार का कम्पन अब भी इसकी हड्डियों में चटखा रहा है

इसके जिस्म की हर हड्डी कम से कम दस टुकड़ों में बंट गयी है।

मैं चाहता तो मेरे प्रहार से यह तुम्हारे इस अतिथि गृह के वायुमण्डल से बाहर शून्य में निकल जाता तब इसकी हड्डियां नहीं चटखतीं लेकिन वायुमण्डल से बाहर होते ही यह मर जाता।

शाबाश! इसे पराजित करके तुमने चौंसठ हजार प्रतियोगिताये जीत ली हैं... अब तुम मेरे साथ... मुख्य प्रतियोगिता स्थल पर चलो... जहां तुम्हें क्रायोटो से भी अधिक शक्तिशाली ब्रह्माण्ड के भिन्न-भिन्न ग्रहों से आये लोगों से युद्ध करना है!

लेकिन उससे पहले मैं इसे इसके ग्रह पर भेज दूं... वरना यह दम तोड़ देगा!

और डोम के मस्तक से निकलने वाली किरणें क्रायोटो के जिस्म को अदृश्य करने लगीं।

उसी क्षण भारत ने भी अपनी एक अदृश्य किरण क्रायोटो के गायब होते जिस्म पर डाली।

क्रणोटो का जिस्म इलैक्ट्रिक एनर्जी में ...

...था भारत की अदृश्य किरण...

...उसका पीछा करती जा रही थी।

...है - डोम इनसे सम्बोधित हुआ।

क्रणोटो अपने ग्रह पर पहुंच गया।

...जब इनसे बात कर रहा था तो भारत ... अपना गुप्त मस्तिष्क सक्रिय करके डा० ... के गुप्त मस्तिष्क के साथ उसका सम्पर्क

जोड़ा

...जैन... यह ... बोल रहा है क्रणोटो का ... उसके ग्रह पर नहीं गया।

...ग्रह गया है?

डा० जॉन का दूसरा मास्तिष्क सक्रिय था- और अब फौलाद, सम्बू तथा अन्तरिक्ष ने भी अपने गुप्त दूसरे मास्तिष्क एक दूसरे से जोड़ लिये थे... और भारत की बातें डा० जॉन के गुप्त मास्तिष्क से गुजर कर इन तीनों तक भी पहुंच रही थी।

डोम ने क्रापोटो को इसी ग्रह पर बने एक भूमिगत स्थान पर ट्रांसमिट किया है। जहां दर्जनों मशीनें हैं! जैसे ही क्रापोटो का जिस्म उनके सामने प्रकट हुआ... एक मशीन ने अपनी चोंच में क्रापोटो के जिस्म को दबाकर उठा लिया।

!!?!!

फिर...

मुझे कोई आपत्ति न
तुम सब भी चल सक

तो फिर चलो!

और फिर वह सब उड़ चले- भारत निरन्तर क्रापोटो को देख रहा था।

फिर उस मशीनी दैत्य ने क्रापोटो को जब अपने पेट में बने एक सूराख से बाहर निकाला तो क्रापोटो का जिस्म अपनी वैज्ञानिक शक्तियों से लैस पोशाक में नहीं था बल्कि उसकी कमर पर वैसी एक रस्सी बंधी थी- जैसी हमारी पृथ्वी पर घने बीहड़ों में पाये जाने वाले असभ्य जंगली पहनते हैं!

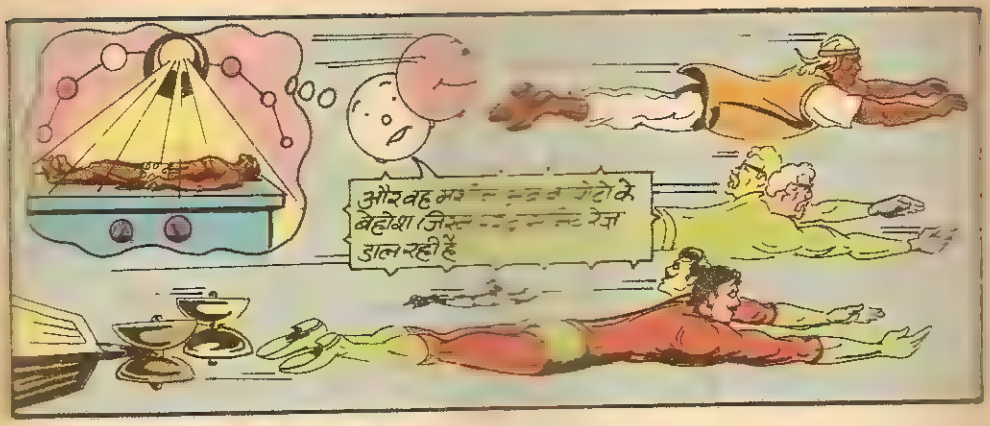
और वह मशीन [illegible] के बेहोश जिस्म [illegible] रेज डाल रही हैं

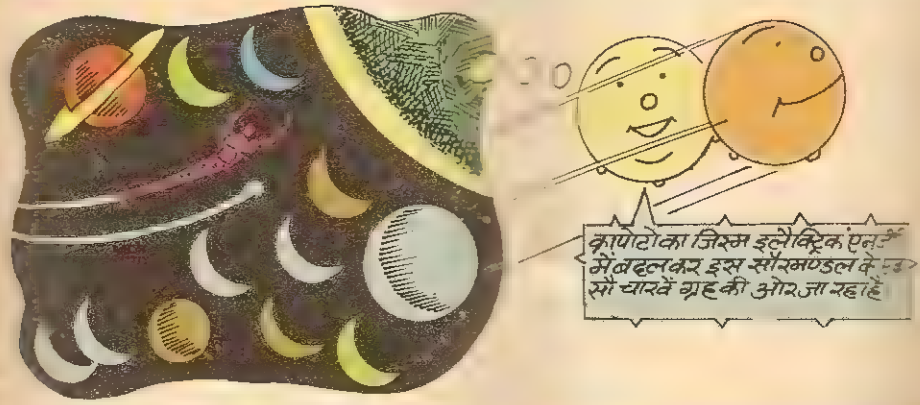
क्रापोटो का जिस्म इलैक्ट्रिक एनर्जी में बदलकर इस सौरमण्डल के सौ चारवें ग्रह की ओर जा रहा है

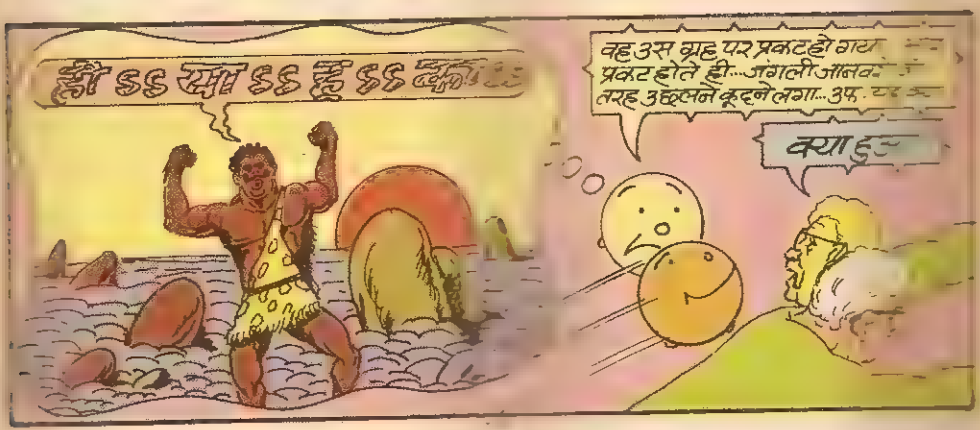
हो ऽऽ ऽऽ हू ऽऽ
वह उस ग्रह पर प्रकट हो गया... प्रकट होते ही... अगली जानवर... तरह उछलने कूदने लगा... उफ्...
क्या हुऽ

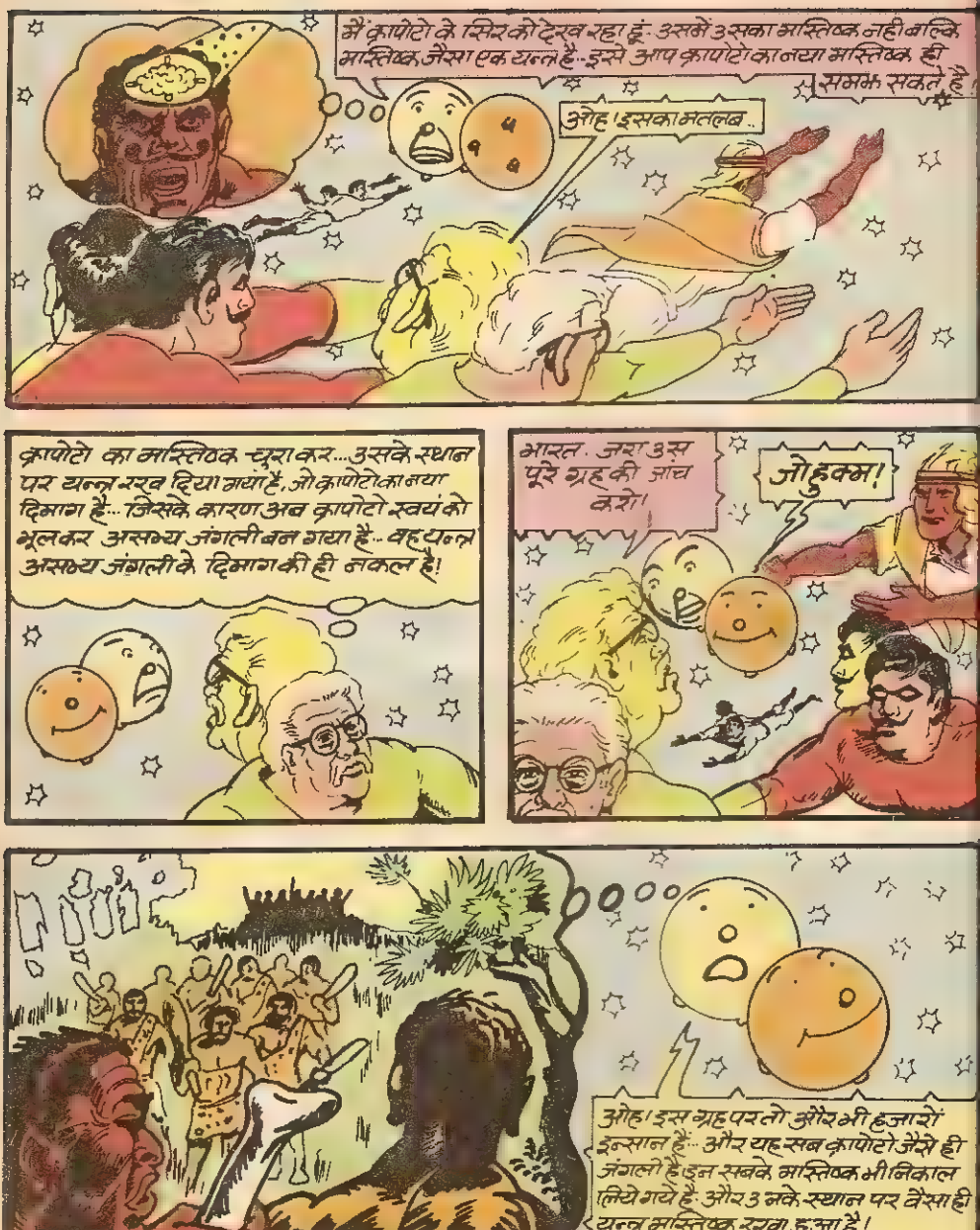
मैं क्रापोटो के सिर को देख रहा हूं. उसमें उसका मस्तिष्क नहीं बल्कि मस्तिष्क जैसा एक यन्त्र है..इसे आप क्रापोटो का नया मस्तिष्क ही समझ सकते हैं!
ओह! इसका मतलब..
क्रापोटो का मस्तिष्क चुरा कर...उसके स्थान पर यन्त्र रख दिया गया है, जो क्रापोटो का नया दिमाग है...जिसके कारण अब क्रापोटो स्वयं को भूलकर असभ्य जंगली बन गया है...वह यन्त्र असभ्य जंगली के दिमाग की ही नकल है!
भारत. जरा उस पूरे ग्रह की जांच करो!
जो हुक्म!
ओह! इस ग्रह पर तो और भी हजारों इन्सान हैं...और यह सब क्रापोटो जैसे ही जंगली हैं. इन सबके मस्तिष्क भी निकाल लिये गये हैं. और उनके स्थान पर वैसा ही यन्त्र मस्तिष्क रखा हुआ है!

यह है मुख्य प्रतियोगिता स्थल!
अब तक कितने आदमी वापस अपने ग्रहों में भेजे जा चुके हैं?
आश्चर्य है · · · · तेजी से हो रहा है
उन्हें उनके ग्रहों पर नहीं बल्कि उनका मस्तिष्क निकालकर उनमें असभ्य जंगली इन्सानों का मस्तिष्क रखकर · अपने ही सौरमण्डल के एक सौ चारवें ग्रह पर भेज दिया गया है!

फौलाद अब नीचे आओ... और जो भी प्रतिद्वन्द्वी खाली नज़र आता जाये उसे एक सिरे से पराजित करते चले जाओ... यहां हर प्रतियोगी अपनी हर किस्म की शक्ति प्रयोग करने के लिये स्वतन्त्र है... इसलिये तुम भी अपनी हर प्रकार की शक्ति का प्रयोग कर सकते हो!

नीचे तो लाखों आदमी हैं... उन सबसे एक-एक करके भिड़ने में काफी समय लग जायेगा- यदि आपका कोई नियम भंग न होता हो तो मैं नीचे मौजूद सब इन्सानों को एक साथ ललकारूं?

फौलाद की बात सुनते ही डोम कहकहा लगा उठा...

वाह! हा, हा, हा... वाह! फौलाद वाह! तुमने वह बात कही है जो इस ग्रह पर आये किसी भी मेहमान ने अबतक नहीं कही!

और अब तक किसी भी प्रतियोगी को कोई नम्बर नहीं मिला है- लेकिन तुम्हें... तुम्हारी इस शानदार बात पर एक नम्बर दिया जा रहा है! अब अन्तिम दृश्य जिसमें तुम्हें अपना नाम लिखवाने के लिये तीन अंक और प्राप्त करने हैं!

फौलाद ने वहीं... हवा में खड़े-खड़े ही अपने सीने पर मौजूद एक गुप्त बटन दबाया... जिसके दबते ही उसकी आवाज़ किसी एटम बम के धमाके से कई गुना तेज और जोरदार हो गई- और पचास हजार मील तक ऐसी गूंजी जैसे लाखों लाउड स्पीकर एक साथ चालू हो गये हों!

की दहाड़ के साथ ही डोम भयानक ढंग से चीख

नहीं sss

के उस भयानक कम्पन से डोम
उसकी नस फट गयीं।

धड़ाम

आँख, नाक, भारत और अन्तरिक्ष को छोड़कर मौजूद हर इन्सान के लिये यह कम्पन
अनीय था- लाखों इन्सानों के कानों के पर्दे फट गए इन्सानों का डोम जैसा ही हाल हुआ।

सुनो

इतना ही नहीं... फौलाद की आवाज के भयानक कम्प की एक भी इमारत साबुत न बची
थीं वह मलबा बन गई... जो दूर थीं, उनकी दीव

नो ssssssssssss

डेमलाशा के रूप में नीचे आ गिरा।

उस ग्रह पर एक नियन्त्रण केन्द्र बनाया गया था जो सारे ग्रह की व्यवस्था देख रहा था, उस इमारत की दीवारें भी फट गयीं थीं।

उस इमारत में से कुछ आदमी बाहर निकले-

यह विस्फोट कहां हुआ? अब कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा- क्योंकि हमारे कानों के पर्दे फट चुके हैं!

लेकिन एक व्यक्ति ऐसा भी था जो अपनी अतिथिशाला के मलबे से सही सलामत निकला-

उस आदमी ने तुरन्त पता लगा लिया कि क्या हुआ था।

हुम्ब... यह कोई विस्फोट नहीं... बल्कि उस इन्सान की आवाज़ थी!

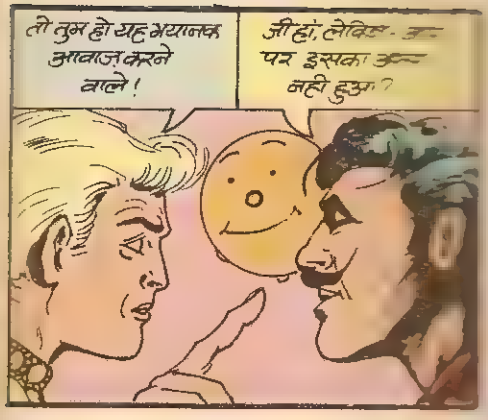
तो तुम हो यह भयानक आवाज़ करने वाले !
जी हां, लेकिन - आप पर इसका असर नहीं हुआ ?

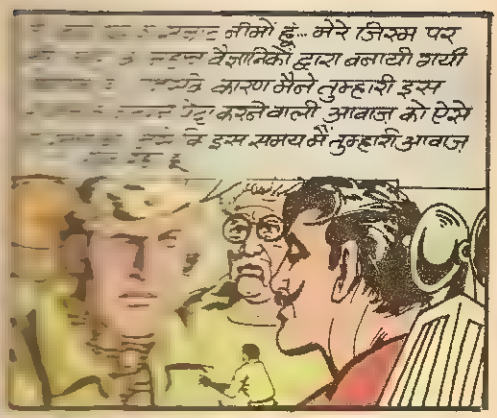
मैं ... ग्रह का प्राणी नहीं हूं... मेरे जिस्म पर ... वैज्ञानिकों द्वारा बनायी गयी ... अपने कारण मैंने तुम्हारी इस ... पैदा करने वाली आवाज़ को ऐसे ... कि इस समय मैं तुम्हारी आवाज़ ...

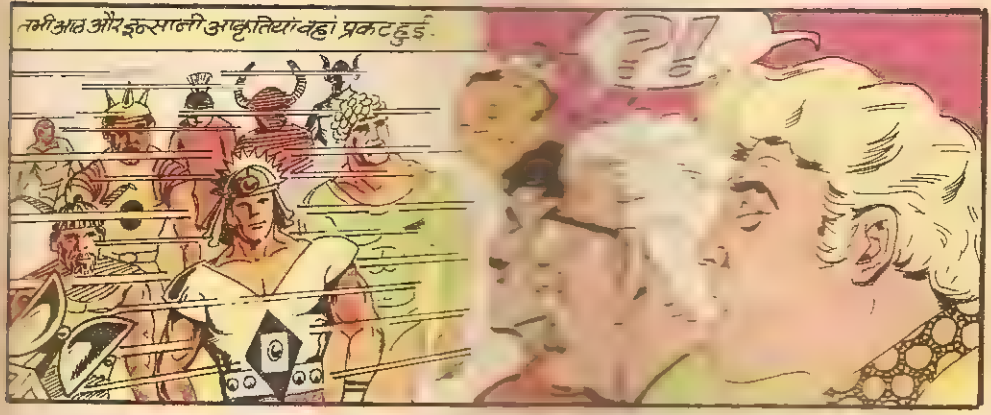
तभी अति और इन्सानी आकृतियां वहां प्रकट हुई

वह आठों अलग-अलग ग्रहों के इन्सान थे
लगता है मेरी आवाज़ के कम्पन से इस पूरे ग्रह पर सिर्फ तुम नौ इन्सान ही अपने आप को सुरक्षित रख सके हो !
हां... तुम्हारे इस कम्पन को हमने तुम्हारे सामान्य आवाज़ में सुना था।

तभी उन सबके पास एक और आकृतिया प्रगट हुई...

मैं महारानी थारस्स महान का सेवक वजीर लूकास हूं!

फौलाद की आवाजके अयालन कम्पन ने दूसरे ग्रहोंसे आये मेहमानों को ही नहीं, इस ग्रह पर मौजूद हमारे सेवकोंको भी इस काबिल नहीं छोड़ा कि वह अब बिना उपचार करवाये कोई अन्य आवाज सुन सके. इसी लिये मुझे अपने सॉफ्टवेअर के केन्द्रीय...

...ग्रह से यहा भेजा गया है ताकि मैं अन्तिम दस विजेताओ का चयन कर सकूं!

और वह चयन हो ही चुका है... इस ग्रह पर सिर्फ तुम नौ व्यक्ति सही-सलामत हो.. इसका फौलाद है ही.. अब तुम दसो विजेताओं और फौलाद के साथियों को मैं केन्द्रीय ग्रह 'शून्य' पर ले जा रहा हूं!

इतना कहते ही वजीर लूकास ने इन सब पर अप्र इरेसीट करने वाली किरण डाल

और अब इन सबके जिस्मों के साथ वजीर लुकास का जिस्म ट्रांसमिट हो रहा था, तो वह पांच 'जासूस यन्त्र' जो डा० जॉन ने फोलाद, लम्बू, भारत, अन्तरिक्ष तथा अपने लिये बनाये थे और जो पृथ्वी से ही इनके साथ आये थे, वह भी इनके साथ थे।-

कुछ ही देर बाद वह सब इस विशाल सौरमण्डल [illegible] ग्रह 'शून्य' पर स्थित अल्लीशान महल के भव्य दरबार में महारानी थाम्ब्रा [illegible] प्रकट हुए।

बेमिसाल है!

आप सबका स्वागत है!

उफ! क्या सेक्स है!

यह मेरा ही चुनाव करेगी!

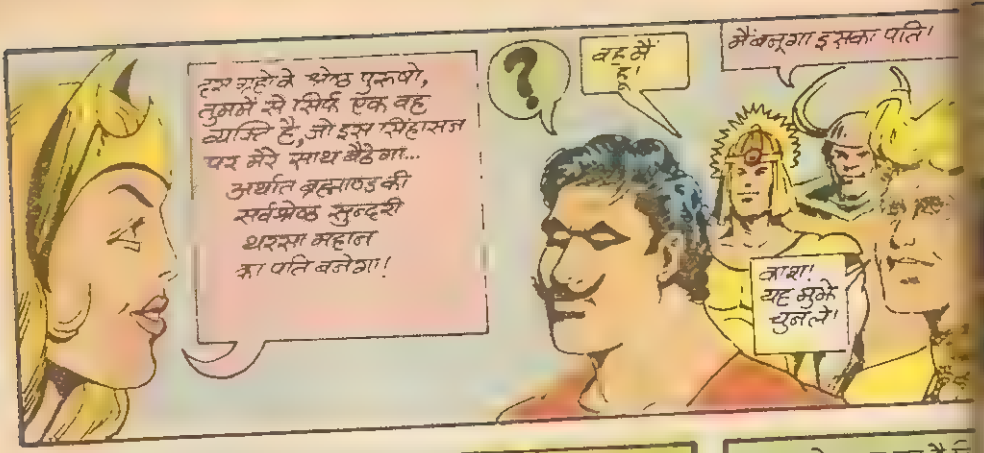
इस ग्रहों के श्रेष्ठ पुरूषो, तुममें से सिर्फ एक वह व्यक्ति है, जो इस सिंहासन पर मेरे साथ बैठेगा... अर्थात ब्रह्माण्ड की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी थारमा महान का पति बनेगा!
?
वह मैं हूं!
मैं बनूंगा इसका पति।
आश! यह मुझे चुनले।

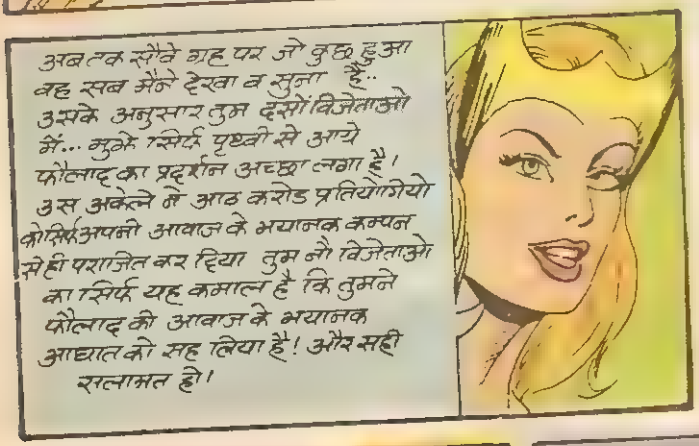
अब तक सौदे ग्रह पर जो कुछ हुआ वह सब मैंने देखा व सुना है.. उसके अनुसार तुम दसों विजेताओं में... मुझे सिर्फ पृथ्वी से आये फौलाद का प्रदर्शन अच्छा लगा है। उस अकेले ने आठ करोड प्रतियोगियों को सिर्फ अपनी आवाज के भयानक कम्पन से ही पराजित कर दिया तुम नौ विजेताओं का सिर्फ यह कमाल है कि तुमने फौलाद की आवाज के भयानक आघात को सह लिया है! और सही सलामत हो!

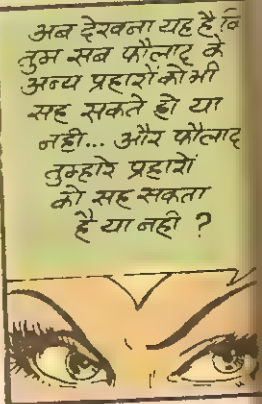
अब देखना यह है कि तुम सब फौलाद के अन्य प्रहारों को भी सह सकते हो या नहीं... और फौलाद तुम्हारे प्रहारों को सह सकता है या नहीं ?

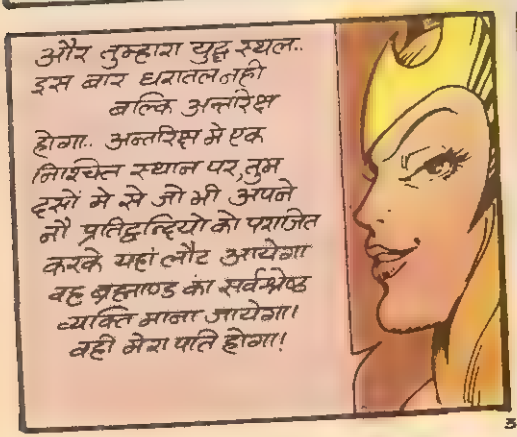
और तुम्हारा युद्ध स्थल.. इस बार धरातल नहीं बल्कि अन्तरिक्ष होगा.. अन्तरिक्ष में एक निश्चित स्थान पर, तुम दसों में से जो भी अपने नौ प्रतिद्वन्द्वियों को पराजित करके यहां लौट आयेगा वह ब्रह्माण्ड का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति माना जायेगा। वही मेरा पति होगा!

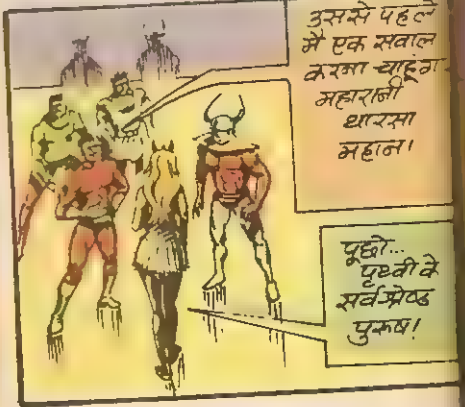
उससे पहले मैं एक सवाल करना चाहूंगा महारानी थारमा महान।
पूछो... पृथ्वी के सर्वश्रेष्ठ पुरूष!

अगर हममें से कोई. कोई नौ इन्सानों को पराजित करके ब्रह्माण्ड का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति बन जाये लेकिन सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति बनने के बाद यदि वह आपका पति बनने से इन्कार कर दे तो क्या होगा ?
यह थारसा महान का अपमान होगा.. जिसका परिणाम यह होगा कि थारसा महान अपना पति बनने से इन्कार करने वाले ब्रह्माण्ड के उस सर्वश्रेष्ठ इन्सान को अपने हाथों से समाप्त कर देगी !
और फिर उसके उस ग्रह का भी नामो निशान मिटा देगी. जिस पर उसका जन्म हुआ होगा !
और यदि मैं यह कहूं कि मैं अपने इन नौ साथियों से मुकाबला नहीं करना चाहता तो ?
तो तुम्हें इन सबसे पराजित हो चुका मानकर तुम्हारे ग्रह 'पृथ्वी' पर वापस भेज दिया जायेगा।
सच सच कहना ये महारानी थारसा कि उस स्थिति में आप मुझे मेरे ही ग्रह 'पृथ्वी' पर भेजेंगी. या अपने ही सौरमण्डल के एक सौ चारवें ग्रह पर... मुझे असभ्य जंगली इन्सान बनाकर
उन लोगों के बीच भेज देंगी.. जो सौवें ग्रह पर पराजित होकर अपने ग्रहों की बजाय... वहां पहुंच गये हैं !
फ..फौलाद !!

यह क्या कह रहे हो तुम? तुम्हें यह वास्तविकता कैसे मालूम हुई - तुमने किस समय एक सौ चार के ग्रह पर जाकर यह पता लगा लिया?
यह सब जानना मेरे लिये कोई मुश्किल काम नहीं, या महारानी थारसा महान!
और अब मैं अपने इन नौ प्रतियोगियों से मुकाबला करने से पहले यह चाहूंगा कि उन सबको, जिन्हें एक सौ चार के ग्रह पर भेजा गया है, उन्हें उनके असली दिमाग लौटा कर उनके ग्रहों पर भेज दिया जाये!
नहीं, यह नहीं हो सकता. वह सब अपने ग्रहों पर लौट कर हमारे इस विशाल सौरमण्डल का रहस्य अपने वैज्ञानिकों को बता देंगे!
अपने सौरमण्डल को दूसरे ग्रहों के वैज्ञानिकों की निगाहों से बचाने के लिये तुम दूसरे ग्रहों के दस अरब इन्सानों का जीवन नहीं छीन सकतीं!
मैं अब तुम्हें और तुम्हारे साथियों को नष्ट कर दूंगी. फिर मैं अपने सौरमण्डल से एक दैत्य भेजूंगी, जो तुम्हारी पृथ्वी को निगल जायेगा!
तुम हमें धमकी दे रहे हो... नन्ही सी पृथ्वी के छोटे से आदमी... जानते हो इसकी क्या सजा है?

स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए मूक दर्शक बने डा० जॉन को अब अहसास हुआ कि अगर जल्दी ही वह एक्शन में न आये तो यह नुकसान उठा जायेंगे... अतः उन्होंने तुरन्त अपने गुप्त मास्टिष्क को सक्रिय करके भारत और अन्तरिक्षक से अपना सम्पर्क जोड़ लिया।

भारत: सुरक्षित आवरण बनाओ. फौलाद तुम हमेशा करोगे- और अन्तरिक्षक तुम सुरक्षा करोगे!

ओ हुक्म!

ठीक है, अंकल!

ओ हुक्म!

अहा शनी थारसा महान... आप हमें नष्ट कर सकें, इतनी शक्ति अभी आपके इस विशाल सौरमण्डल के वैज्ञानिकों ने अर्जित नहीं की!

तो ठीक है, अब तुम मेरी शक्ति के दर्शन करो!

लेकिन इनसे पहले कि थारसा के हाथ से निकली किरणें फौलाद तक पहुंच पातीं- भारत ने एक 'घेरण दागी' जिसने इन सबको अपने घेरे में ले लिया!

और थारसा के हाथ से निकली किरणें भारत की अदृश्य किरणों के अदृश्य घेरे से टकराईं!

अरे! ये तुम एक अदृश्य सुरक्षित घेरे में हो!

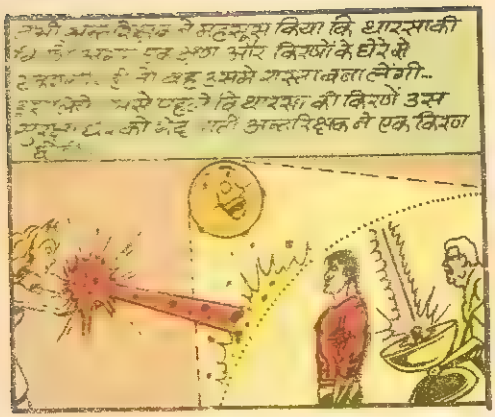
उसे किरण ने बड़ी सुगमता से किरणों के घेरे में से रास्ता बनाया.

अन्तरिक्षक ने महसूस किया कि धारसा की [illegible] एक [illegible] किरणों के घेरे से [illegible] वह उसमें रास्ता बना लेगी...

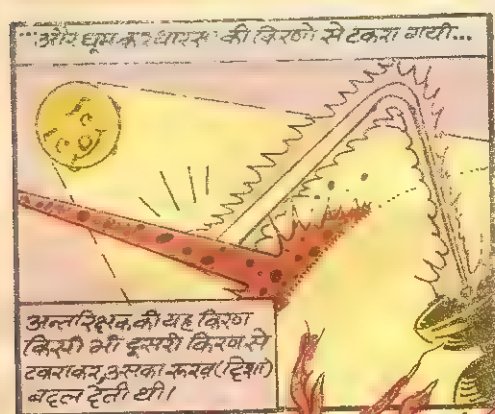
अन्तरिक्षक की यह किरण किसी भी दूसरी किरण से टकराकर उसका रूख (दिशा) बदल देती थी।

...और घूमकर धारसा की किरणों से टकरा गयी...

...ऐसे ही दोनों किरणों का टकराव हुआ... धारसा किरण की दिशा बदल गयी... और दुर्भाग्यवश...

...उन किरणों के निशाने पर दूसरे नौ ग्रहों के वह सारे उम्मीदवार आ गये, जो सबको पराजित करके धारसा का पति बनने का स्वप्न देख रहे थे।

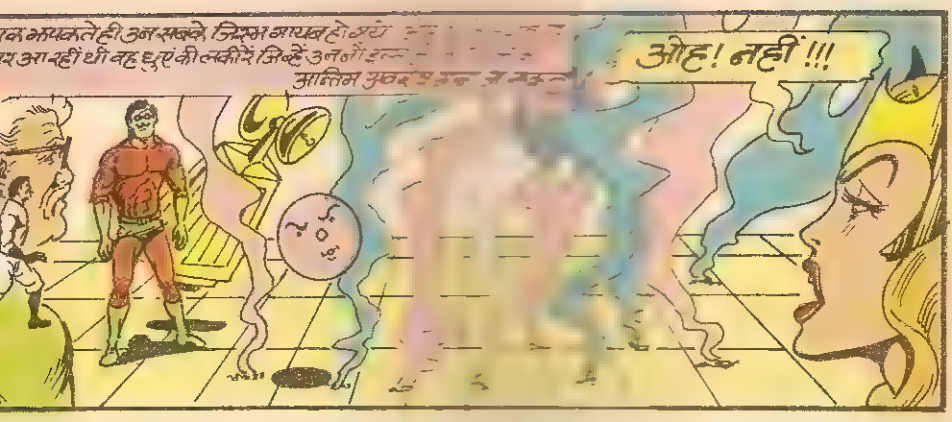
ओह! नहीं !!!

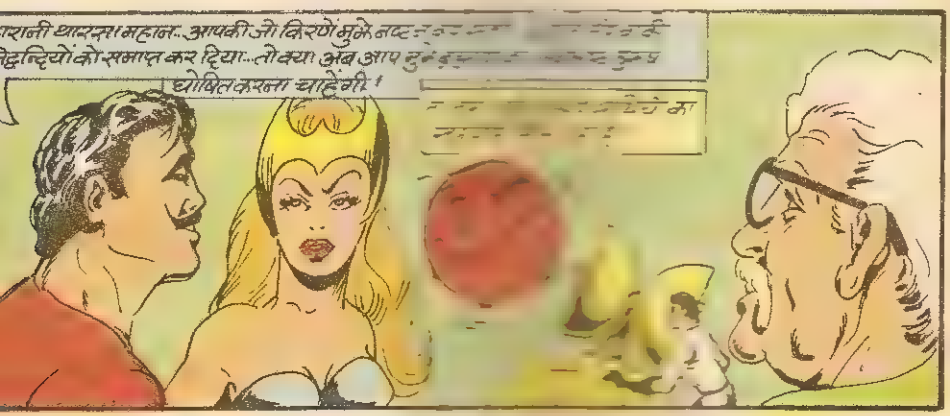
धोखित करना चाहेगी !

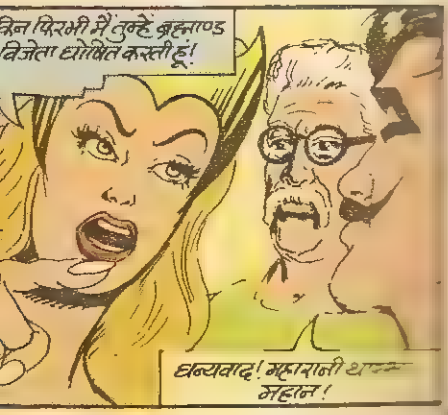
धन्यवाद! महारानी थान्द्रा महान!

अपना पति स्वीकार करती हूं!

क्या मतलब- जीवित रहने तक विवाह नहीं करोगे! तो क्या मरने के बाद करोगे विवाह?

जी हां! मरने के बाद मेरी आत्मा पर देवी 'शफीना' का अधिकार है!

'शफीना'! यह कौन है?

आश्चर्य है! आप उसे नहीं जानते जबकि आपका दावा था कि आपने सौरमण्डल के महान वैज्ञानिकों ने ब्रह्माण्ड के उन सब ग्रहों को खोज लिया है, जिन पर जीवन है!

इसका दावा सही है... ब्रह्माण्ड के सर्वश्रेष्ठ पुरुष- फौलाद! अगर तुम इसे झूठ साबित कर सकते हो तो करके दिखाओ!

ठीक है, मैं देवी शफीना को बुलाता हूं... वह तुम्हें स्वयं बतायेंगी कि ब्रह्माण्ड में अभी और भी ऐसे ग्रह हैं, जहां जीवन है! इसलिये तुम्हारा यह स्वयंवर अभी अधूरा है- क्योंकि तुमने ब्रह्माण्ड के उन सभी ग्रहों के श्रेष्ठ पुरुषों को नहीं बुलाया है!

लेकिन इससे पहले कि फौलाद देवी शफीना को याद कर पाता और उसके याद करते ही देवी शफीना उस दरबार में प्रकट होकर सबको चकित कर देतीं, वहां एक चमत्कार हुआ... तेज चकाचौंध रोशनी हुई...

उस चकाचौंध से वहां सबकी आंखें चुंधिया गयीं थीं- वह कुछ भी नहीं देख पा रहे थे- फौलाद, लम्बू और डा० जॉन, जो कि वैज्ञानिक पोशाकों में लैस थे, उनकी आंखें भी इस चकाचौंध में कुछ नहीं देख पा रही थीं- मानव आँख अल्टीमेट के दृष्य पटल पर भी इस चकाचौंध के अतिरिक्त कोई दृष्य नहीं उभर सका था।

दो सेकिन्ड तक वह रहस्यमय चकाचौंध बनी रही... उसके बाद जब वह चकाचौंध गायब हुई तो वहां एक साथ बहुत सी आश्चर्य भरी चीखें गूंज उठीं... जिनमें फौलाद, डा० जॉन और लम्बू की चीखें भी शामिल थीं।

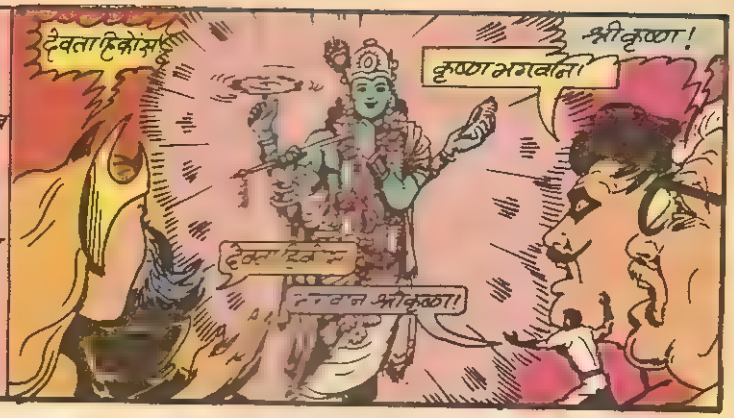

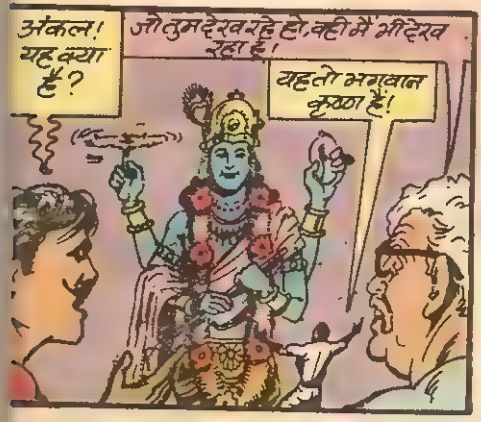

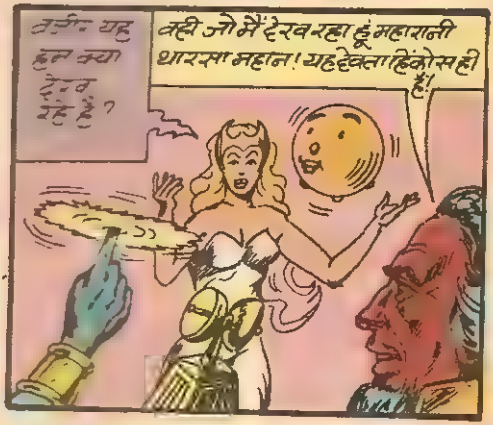

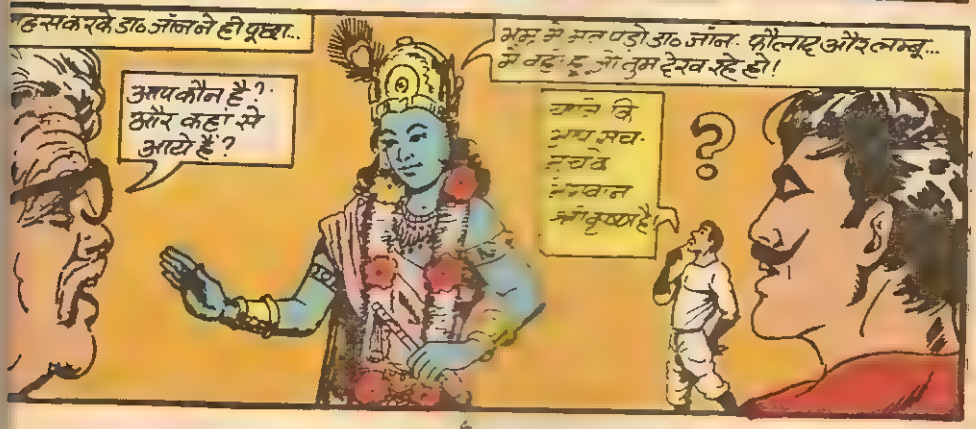

नहीं... सुरवं पृथ्वीवासियो, यह हमारे देवता हिंकोस हैं!

देवता हिंकोस! यह क्या होता है? यह तो हमारे कृष्ण भगवान हैं! मुरली मनोहर हैं! कन्हैया हैं! देवता हिंकोस कोई और होगा!

लेकिन इससे पहले कि उनके बीच यह विवाद बढ़ता... कृवण भगवान की धीर- गम्भीर और लुभावनी मधुर आवाज़ गूंज उठी।

शान्त... शान्त!

विलोम सौरमण्डल के लिये मैं हिंकोस हूं... और पृथ्वी के लिये कृवण हूं... ब्रह्माण्ड में इस उस ग्रह पर मुझे 'अवतार' लेकर पाप का नाश करना पड़ा है, यही जीवन है! और हर दुनिया में अर्थात प्रत्येक सौरमण्डल में मेरा रूप यही रहा है... पर नाम अलग था. इसलिये विवाद में मत पड़ो... कृवण भी मैं हूं... और हिंकोस भी मैं हूं

और इस जन्म में मेरे दूसरा प्रश्न यह किया था कि मैं कहां से आया हूं. सो, हे पृथ्वी के प्राणी... मैं वहां से आया हूं जिसे तुम सब 'स्वर्ग' कहते हो या 'वैकुण्ठ' भी कहते हो. और जिसे भवाले यही प्रश्न करेंगे तो मैं कहूंगा... मैं ग्रह से आ रहा हूं!

और अब जैसा कि स्वाभाविक है... तुम सब सोच रहे हो कि मैं अपना लोक छोड़कर यहां क्यों आया हूं- तो इसके कई कारण एक साथ प्रकट हुए हैं... पहला कारण यह है कि जब से 'ब्रह्मा' जी ने, सृष्टि रची है- तब से आज तक, न तो कोई देवी- देवता एक अरब लोकों (ग्रहों) का विजेता हुआ था- न ही किसी राक्षस ने यह सम्मान पाया था- जो आज पृथ्वी लोक (पृथ्वी ग्रह) के फौलादी रीढ़ ने पाया है!

भगवान श्रीकृष्ण... अपनी शान्त, मधुर और मन को मोहने वाली मीठी आवाज में बोल रहे थे!

दूसरा कारण यह है कि महारानी थारसा सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी है, जो सिर्फ 'स्वर्ग' था विलोम शब्दों के अनुसार 'समर' के लिये है! तीसरा कारण यह है कि महारानी थारसा ने अपने स्वयंवर के लिये एक अरब ग्रहों के [illegible] को आमन्त्रित किया था। सृष्टि के इतिहास में इतने लोकों (ग्रहों) को पहली बार आमन्त्रित किया गया था! और जब यहां इतना बड़ा आयोजन किया गया तो महारानी [illegible] ने समर लोक (स्वर्ग लोक) को क्यों नहीं आमन्त्रित किया?

चौथा और मेरे [illegible] बड़े प्रमुख कारण यह है कि [illegible] अपमान महसूस हुआ है [illegible] महारानी थारसा यह समझ [illegible] स्वर्ग (लोक) में उसके योग्य [illegible] क्या यही सोच कर समर लोक [illegible] दूत नहीं भेजा गया?

न... नहीं... देवता हिकोस... यह बात नहीं है!

तो क्या बात है थारसा ? यह बात स्पष्ट करो !
विलोम के वैज्ञानिक अब तक ब्रह्माण्ड मे समय लोक को खोज नहीं पाये हैं!
स्वर्ग लोक तो बहुत दूर की बात है... श्री कृष्ण भगवान विलोम के वैज्ञानिक अभी ब्रह्माण्ड के बहुत से ग्रहो को नही खोज पाये हैं.. जिनमें देवी शफीना का ग्रह भी शमिल है!

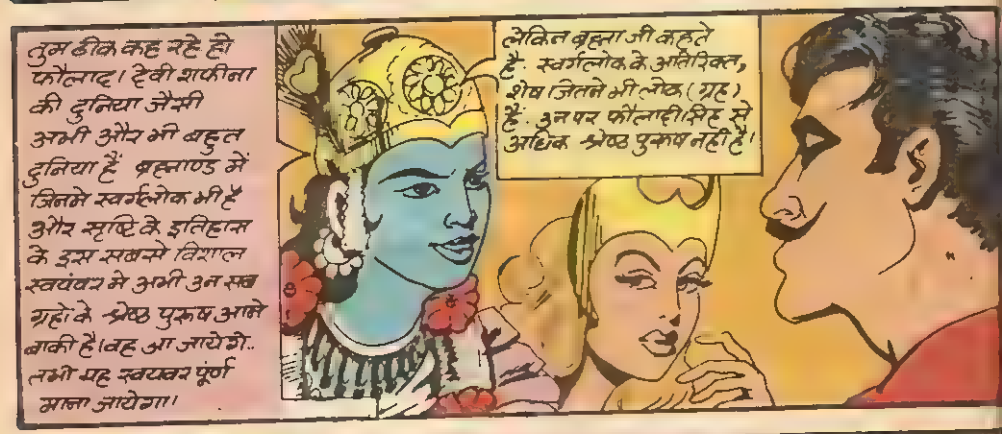
तुम ठीक कह रहे हो फौलाद। देवी शफीना की दुनिया जैसी अभी और भी बहुत दुनिया हैं ब्रह्माण्ड में जिनमे स्वर्गलोक भी है और सृष्टि के इतिहास के इस सबसे विशाल स्वयंवर मे अभी उन सब ग्रहो के श्रेष्ठ पुरुष आने बाकी है। वह आ जायेगे.. तभी यह स्वयंवर पूर्ण माना जायेगा।
लेकिन ब्रह्मा जी कहते है: स्वर्गलोक के अतिरिक्त, शेष (जितने भी लोक (ग्रह) हैं. उन पर फौलादी शरीर से अधिक श्रेष्ठ पुरुष नही है!

इसलिये, फौलाद ब्रह्माण्ड का सर्वश्रेष्ठ पुरुष बनने के लिये तुम्हे अभी स्वर्ग के उस श्रेष्ठ पुरुष पर विजय पानी होगी, जिसे ब्रह्मा जी ने स्वय थारसा के स्वयंवर के लिये चुना है!
म... मैं... नहीं... भला यह कैसे हो सकता है... म... मैं एक साधारण इन्सान हूं... भला स्वर्ग के श्रेष्ठ पुरुष का मुकाबला करने का साहस कैसे कर सकता हू मैं ?

तभी डा० जॉन ने अपना गुप्त मस्तिष्क सक्रिय करके भगवान और अन्तर्दिशक से पूछा...

तुम दोनों क्या कर रहो हो...?

भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन कर रहे हैं... अर्थात यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि यह सचमुच भगवान हैं या कोई वैज्ञानिक चमत्कार है?

तो क्या पता लगाया है तुमने?

हम यह तो नहीं बता सकते कि यह कृष्ण भगवान नकली हैं... या असली हैं - पर यह बता सकते हैं कि... स्वयं को 'कृष्ण भगवान' कहने वाले इस आदमी से हम जीत नहीं सकते!

क्या यह वैज्ञानिक शक्तियों से लैस है?

यह भी ठीक से पता नहीं लगा पा रहे हैं हम कि इनके पास जो शक्तियां हैं वह वैज्ञानिक हैं या प्राकृतिक रूप से इनके जिस्म में भरी हुई हैं - पर यह कह सकते हैं कि इनके पास असीमित शक्तियां हैं!

उसी समय कृष्ण भगवान मुस्कराते हुए बोले!

सुन लिया डा० जॉन!

डा० जॉन समझ गये कि कृष्ण भगवान ने उनके गुप्त मस्तिष्क का यह वार्तालाप सुन लिया है... इसलिये वह थोड़ा सकपका से गये!

वह यन्त्र चकरा गये हैं... लेकिन हमें दुख है कि आप हमारी वास्तविकता पर सन्देह क्यों कर रहे हो?

!!!?

...अन्तर्यामी हैं... आपसे कुछ भी तो छुपा नहीं है... आप यह भी जानते हैं कि मनुष्यों की जिज्ञासा ...नहीं है... मैं वैज्ञानिक हूं... वैज्ञानिक ...ऐसा एक भगवान बना भी सकता ...चुप नहीं रहेगा... कोई भी ...लेगा कि वह नकली भगवान ...सोचकर मैं अपने यन्त्रों से ...कर रहा था... लेकिन स्पष्ट हो गया ...वैज्ञानिक की कृति नहीं बल्कि ...हैं!

तुम ही नहीं... फौलाद और लम्बूमी तथा थारसा, अँरवजीर भी मेरे बारे में तुम्हारी ही तरह सोच रहे हैं। जिस प्रकार तुमने मुझे अपने कम्प्यूटरों से चैक करवाया है... उसी प्रकार गुप्त रूप से थारसा भी मुझे चैक करवा चुकी है! इस दरबार की दीवारों में पचास वैज्ञानिक आँखें मुझे लगातार देख रही हैं... और थारसा को वास्तविकता बता रही हैं!

अ... आप सब कुछ जानते हैं... देवता हिकोस... आपसे कुछ भी छुपा नहीं है- मेरा और वैज्ञानिकों का सन्देह मिट गया है- आप कोई वैज्ञानिक चमत्कार नहीं! बल्कि सचमुच देवता हिकोस सही हैं!

कृष्ण भगवान, मेरा अपराध भी क्षमा करें! दरअसल हम तुच्छ प्राणी यह कल्पना भी नहीं करते थे कि कभी हम साक्षात कृष्ण भगवान को देखेंगे... इसलिये सन्देह था... वह सन्देह अब मिट गया है!

हम भी क्षमा चाहते हैं भगवान श्री कृष्ण!

और मैं भी!

ठीक है, सबको क्षमा किया... और अब सुनो थारसा... मैं फौलाद को समरलोक (स्वर्गलोक) ले जा रहा हूं... और फिर मेरे साथ जो भी इन्सान यहां लौट कर आयेगा... वही ब्रह्माण्ड का विजेता होगा, वही वह सर्वश्रेष्ठ पुरुष होगा, जिसे तुम अपना पति स्वीकार करोगी।

जो आज्ञा, देवता हिकोस!

श्रीकृष्ण महाराज कहाँ विलुप्त हैं ?

अच्छा! समझ गया... तुम्हारे मस्तिष्क को पढ़ रहा हूं मैं... भक्तों के मन में हृदय में बैठा रहता हूं... तुम यह चाहते हो कि तुम्हारे साथी तुम्हारे [illegible] जॉन तथा, होस्त लम्बू और यह हीरो कम्प्यूटर भी साथ चलें... और यहीं बैठे बैठे पांचों से जुड़े तुम्हारे यह सारे आधुनिक यन्त्र भी चलें... हे वत्स! इस लोक (ग्रह) के [illegible] फिर तुम्हें हैरत हो रही है कि यह सब भी चल रहे हैं। अच्छा [illegible] अभी इन्हें समर लोक ले जाता हूं।

अगले ही क्षण...

गायब!

देवता हिंकोस... चले गये... पृथ्वीवासियों को समर लोक ले गये... काश! मैं भी जीवित [illegible] में रत्नाशीष 'समर लोक' जा [illegible]

और एक समय वह आया जब स्वर्ग के सारे [illegible] इन पृथ्वीवासियों के [illegible] शत्रु बन जाते हैं तो [illegible] कौन जीता? यह तब [illegible] पढ़ेंगे...

"फौलादी सिंह [illegible] स्वर्ग कहां था? स्वर्ग में फौलाद ने किसके [illegible] स्वर्ग में क्या-क्या [illegible] हुए?

जो अगले [illegible] हो रहे हैं

डायमण्ड कॉमिक्स की एक महान चित्रकथा !

अगले माह आपके शहर में !

फौलादी सिंह और स्वर्ग के भगवान

1 यह स्वर्ग असली है या नकली ?... इस सवाल का जवाब आपको तभी मिलेगा जब आप पढ़ेंगे... फौलादी सिंह और स्वर्ग के भगवान।

2 यह स्वर्ग कहां है ? क्या उस स्वर्ग में सारे देवी-देवता थे ?

3 भगवान शिव क्रोधित होकर, अपना तीसरा नेत्र खोल कर, फौलाद को क्यों भस्म कर देना चाहते थे ?

4 भगवान राम... ने जिस तीर से रावण का वध किया था... वही तीर उन्होंने लक्ष्मण पर क्यों छोड़ा ?

5 डा० जॉन ने ऐसा कौन सा गुनाह कर दिया था कि भगवान कृष्ण को उन पर अपना सुदर्शन चक्र चलाना पड़ा ?

इन सब सवालों का जवाब पाना है तो अगले माह अवश्य पढ़ें... फौलादी सिंह और स्वर्ग के भगवान

डायमण्ड कॉमिक्स प्रा० लि०, 2715, दरियागंज, दिल्ली, 110002